

फोन आखौतँ खि ठीक ना नौथि



फोन आखौउँ खि ठीक ना नौथि

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

प्रकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बढ़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकि जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद ॥



एक गाउँ दि रातल नौऊँ रौ एक
माऊँ रौये थौ। तेसकै तेसरी आमा
पापाइ एक नौ फोन देणौ। रातल
बौरी खुश उवौ।



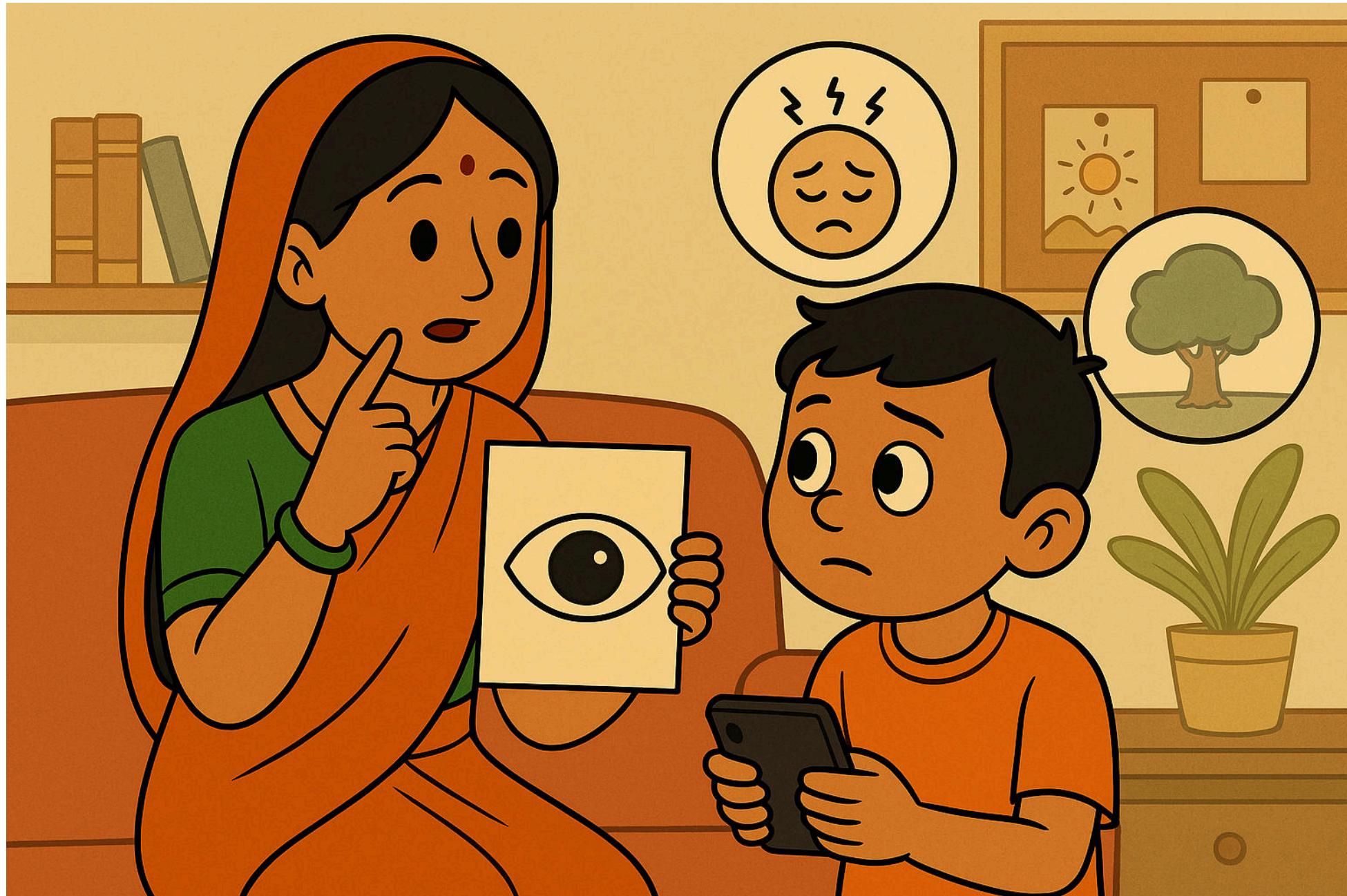
ਰਾਤਲੇਈ ਫੋਨ ਦਿ ਗੈਮ ਖੇਲਣਾ
ਔਜ਼ਿ ਵੀਡਿਉ ਦੇਖਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਿਯਾ ।
ਸੇਤ ਪੁਰਾਂ ਦੂਸ ਫੋਨ ਦੇਖਦੇਈ ਆਂਧੇ
ਥੈ ਲਾਗੈਂਦਾ ।



आराम आराम कौइ रातल री
आखौउं दि थौकान औज़ि ज़ळन
उन्दि लागी । तेसके दुरे री चिज़ै बी
दुन्दली रौइ थी दिशि दि लागी ।



रउल री आमाइ देखौ कि सेउ बार
बार आपडै आखौउँ रौ थौ मितान्दै
लागी । तिंयै सेउ सौमज्जाओ कि
जादा फोन देखपै कौइ आखौउँ दि
नुकसान औई सौकै ।



आज़ि बोलौ कि बौरी बौत्ते जौउँ
फोन री स्कीन देखणै कौइ आमारी
आखै गौरगौरायै जेसकौइ मुँड दुखै
आज़ि दुन्दलौ दिशै ।



रातलेड मैसूस कियौं कि तेसरी
आखौउं दि ऐ सौमस्या जादा फोन
देखणे कौइ रौइ उई। तिणी एशौ तय
कियौं कि एत्रा कौइ आउं फोनेड
कम देखु।



तेतवासियै रातल बाझै खेलदै बी
डै-दै लागौ। सेउ आपडै दोस्तु रै
साथै दोडै ओज़ि खेलदै लागौ।



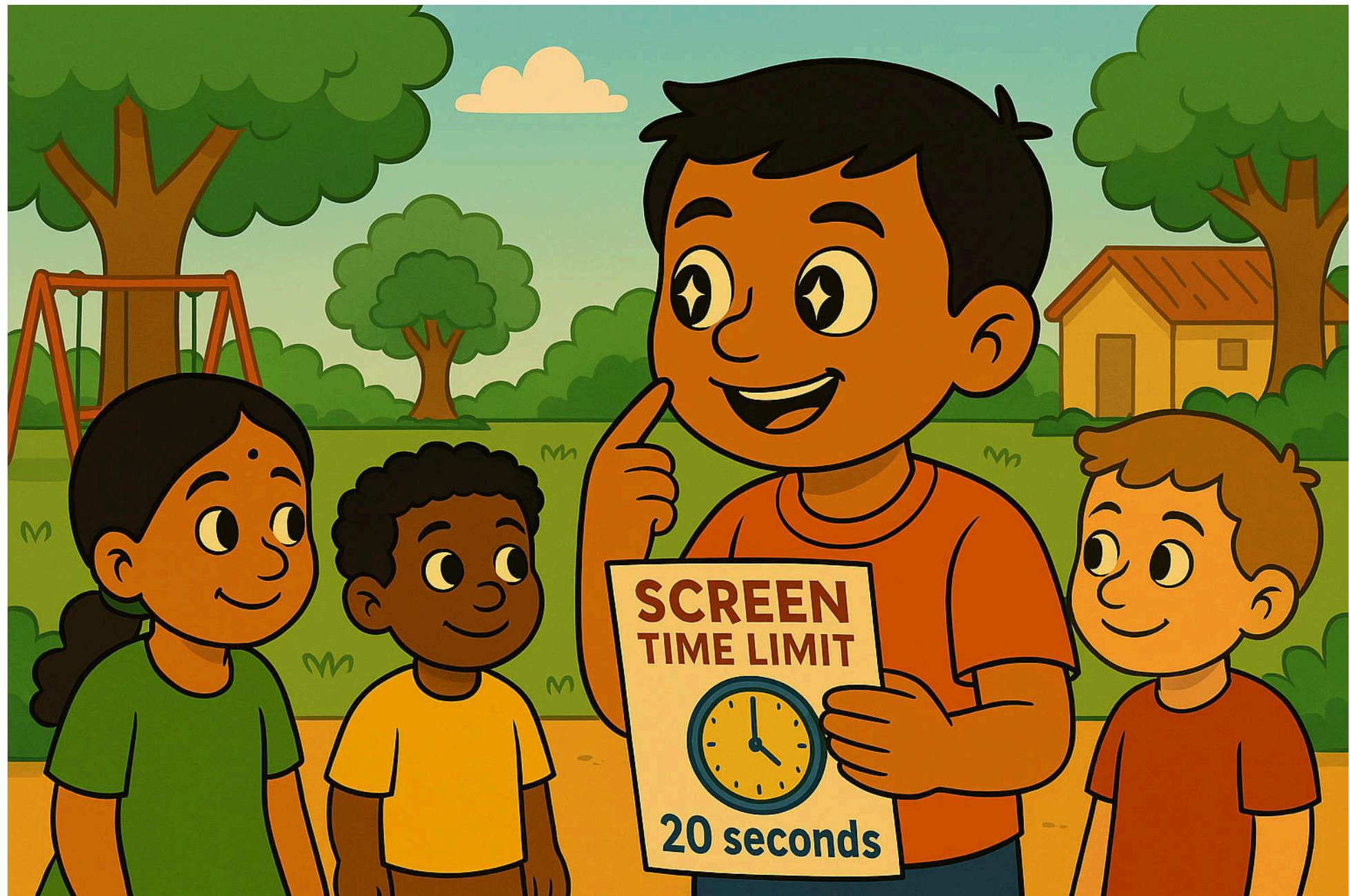
ਬਾਝੈ ਖੇਲਣੇ ਰੀ ਬੈਂਜ਼ੈ ਕੌਇ ਰਾਤਲ ਰੀ
ਆਖੈਤੁੱਂ ਦਿ ਆਰਾਮ ਤਵੈ ਆੰਜ਼ੀ
ਤੇਸਰੀ ਆਖੈ ਕੀ ਠੀਕ ਤਨਿਂਦ ਲਾਗੀ ।



रातलेइ शिकौ कि दुइ गैण्टै कौइ
जादा फोन री स्क्रीन ना देखणै चाइं ।
एउ आमारी आखौउं खी ठीक
न नौथि ।



तिणी एशौ बी शिकौ कि बीश मीनट
बासियै बीश 20 सेकंड जौउँ 20
फुट दुरै कासी चिज्जेइ देखणै चाइं ।
एसकोइ आमारी आखौउँ दि आराम
मिलै ।



राउलेइ आपडै दोस्तु आरी वी बोलौ
कि जौ आमै जादा फोन देखिण तै
तेसकौइ आमारौ बौरी नुकशान
आयै। एजि बौजै कौइ तेसरै दोस्तुं
बाझरै खेलणै रौ बौत्त थोडौ
जादा बौड़ाओ।



ऐवै रातल औज़ि तेसरै दोस्त स्वस्थ
औज़ि खुश थै। तिउँ सौमज़ौ कि
फोन कम देखणै कौइ बौड़िया बाझरै
खेलणौ आमारी आखौउँ खी औज़ि
सेहत खी बौड़िया।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में व्यस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,,,धन्यवाद,,,,,,,,,,

